ॐ ह्रीं ॐ

महाविद्यास्तोत्रम् - सप्रयोगः

संकलनकर्ता

अक्षरसंयोजकश्च

स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

सत्यं साधना कुटीर

ग्रामः कैलास गेट-मुनि की रेती, डाकः कैलास गेट,

तहः ऋषिकेश, जिलाः टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड, 249137.

चलदूरभाष् : 9557130251, ईपत्रः swsdsr@gmail.com Web: www.satyamsadhana.org

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

ग्रन्थनामः-**महाविद्यास्तोत्रम् - सप्रयोगः।**

प्रकाशक :- **श्री सत्यं साधना कुटीर समिति,** ऋषीकेश.

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण : मंगलवार, 28 मार्च 2017, चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा, संवत् 2074.
प्रतियां : 500 (पांचसौ)

प्रधान सम्पादक :स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

सम्पादक मण्डल: स्वामी सर्वेशानन्द सरस्वती, पं. ज्योतिप्रसाद उनियाल.

अक्षर संयोजन :स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती.

पुस्तक प्राप्ति स्थान- श्री सत्यं साधना कुटीर समिति,
ग्राम: कैलास गेट-मुनि की रेती, डाक: कैलास गेट,
तह: ऋषिकेश, जिला: टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड, 249137, भारत.

चलदूरभाष् : 9557130251, ईंपत्र: swsdsr@gmail.com Web: www.satyamsadhana.org

सहयोग राशि : 30/= मुद्रक : सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस, ऋषिकेश.

प्रस्तावना

मानवमात्र के इहलोक व परलोक के सुखप्राप्ति और जीवन का मुख्य लक्ष्य मोक्षप्राप्ति हेतु ऋषि-मुनियों ने निष्कामकर्मयोग और ज्ञानयोग के बीच में निष्कामभक्तियोग को रखा है। वैदिक सनातन धर्म के वैदिक परम्परा के अनुसार पूर्व में मुद्रित शिवपूजापद्धतिप्रकाशः, पूर्णिका सहित श्रीयन्त्रपूजापद्धतिप्रकाशः, वास्तुपूजापद्धतिप्रकाशः और सप्तशतीहवनविधिः सहित दुर्गा पूजापद्धतिप्रकाशः को पढ़कर पाठकों, जिज्ञासुओं, कर्मकाण्डी ब्राह्मणों एवं उपासकों ने ''महा विद्यास्तोत्र'' को सविधि यानि सप्रयोग मुद्रित करने केलिये निवेदन किया। अतः मुण्डमालातन्त्र , रुद्रयामलतन्त्र, मन्त्रमहोदधि आदि ग्रन्थों के आधर पर इस ग्रन्थ का संकलन करने केलिये प्रया स करने लगा तो पूर्ववत् दक्षिण व उत्तर भारत के अनेकों पण्डितों ने सहयोग दिया है। विशेषतः पं. ज्योतिप्रसाद उनियालजी ने तो संशोधन कार्य में भी पूर्ण सहयोग दिये हैं जो कि अविस्मरणी य ही नहीं अपितु अत्यन्त श्लाघनीय है। इसकी सफलता में अनेक प्रकार से सहयोग देनेवाले सभ ी का मैं अत्यन्त आभार व्यक्त करता हूँ। पूर्ववत् इस ग्रन्थ से सभी को मार्गदर्शन मिले और सभी लाभान्वित हो ऐसी माँ भगवती से प्रार्थना करते हुये माँ के चरणों में सादर समर्पित करता हूँ।

सभी की आत्मा
स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

महाविद्यास्तोत्रम् - सप्रयोगः

ॐ महाविद्यां प्रवक्ष्यामि महादेवेन निर्मिताम्। उत्तमां सर्वविद्यानां सर्वभूतवशंकरीम्।।

संकल्पः - ॐ तत्सदद्य.....मासे.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे.....गोत्रोत्पन्नः.....शर्माऽहं मम गृहे उत्पन्नभूत प्रेत पिशाच ग्रहादि सकलदोषशमनार्थं झटित्यारोग्यताप्राप्त्यर्थं च सकलबाधानिवृत्तिपूर्वक स्ववांछितफलप्राप्त्यर्थं लक्ष्यसिद्ध्यर्थं च महाविद्यास्तोत्रस्य पाठं करिष्ये।

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीमहाविद्यास्तोत्रमहामन्त्रस्यऽर्यमा ऋषिः, गायत्री छन्दः, कालिका देवता, हुँ श्रीं ह्रीं बीजं, वज्रवैरोचनीये शक्तिः, हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं कीलकम्, श्रीसदाशिवदेवताप्रीत्यर्थे मनोवांछितफलसिद्ध्यर्थे च जपे विनियोगः।

अथ ऋष्यदिन्यासः - ॐ अस्य श्रीमहाविद्यास्तोत्रमहामन्त्रस्यऽर्यमा ऋषये नमः - शिरसि, ॐ गायत्री छन्दसे नमः - मुखे, ॐ कालिका देवतायै नमः -हृदये, ॐ हुँ श्रीं ह्रीं बीजाय नमः -गुह्ये, ॐ वज्रवैरोचनीये शक्तये नमः - पादयोः, ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं कीलकाय नमः - नाभौ, ॐ श्रीसदा-शिवदेवताप्रीत्यर्थे मनोवांछितफलसिद्ध्यर्थे च जपे विनियोगाय नमः - सर्वांगे।

अथ करन्यासः - ॐ हुँ श्रीं ह्रीं नमः -अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ वज्रवैरोचनीये नमः -तर्जनीभ्यां नमः, ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं नमः -मध्यमाभ्यां नमः, ॐ हुँ श्रीं ह्रीं नमः -अनामिकाभ्यां नमः, ॐ वज्रवैरोचनीये नमः - कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं नमः - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ हृदयादिन्यासः - ॐ हुँ श्रीं ह्रीं नमः -हृदयाय नमः, ॐ वज्रवैरोचनीये नमः -शिरसे स्वाहा, ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं नमः -शिखायै वषट्, ॐ हुँ श्रीं ह्रीं नमः -कवचाय हुम्, ॐ वज्रवैरोचनीये नमः - नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं नमः -सर्वांगे।

अथ ध्यानम् - उद्यच्छीतांशुरश्मिद्युतिचयसदृशीं फुल्लपद्मोपविष्टां
वीणानागेन्द्रशंखायुधपरशुधरां दोर्भिरीड्यैश्चतुर्भिः।
मुक्ताहारांशुनानामणियुत हृदयां सीधुपात्रं वहन्तीं,
वन्देऽभीड्यां भवानीं प्रहसितवदनां साधकेष्टप्रदात्रीम्।।

ॐ कुलकरीं गोत्रकरीं धनकरीं पुष्टिकरीं वृद्धिकरीं हलाकरीं सर्वशत्रुक्षयकरीं उत्साहकरीं बल वर्द्धिनीं सर्वग्रहोच्चाटिनीं पुत्रपौत्राभिवर्धिनीं आयुरारोग्यैश्वर्याभिवर्धिनीं सर्वभूतस्तम्भिनीं द्राविणीं मोहिनीं सर्वाकर्षिणीं सर्वलोकवशंकरीं सर्वराजवशंकरीं सर्वयन्त्रमन्त्रप्रभेदिनीं ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुराह्निकं पांचाह्निकं षाडाह्निकं साप्ताहिकं अर्धमासिकं मासिकं षाण्मासिकं सांवत्सरिकं वैजयन्तिकं पैत्तिकं वातिकं श्लैष्मिकं सान्निपातिकं कुष्ठरोग-मुखरोग-गण्डरोग-प्रमेहरोग-शुल्काविं -शिक्षयकरीं विस्फोटकादिविनाशनाय स्वाहा। बेतालादिज्वर-रात्रिज्वर-दिवसज्वर-अग्निज्वर-प्रत्यग्निज्वर-राक्षसज्वर-पिशाचज्वर-ब्रह्मराक्षसज्वर-प्रस्वेदज्वर-विषमज्वर-त्रिपुरज्वर-मायाज्वर -आभिचारिकज्वर-वष्टिज्वर-स्मरादिज्वर प्रयोगादिविनाशनाय स्वाहा। सर्वव्याधिविनाशनाय स्वाहा। सर्वशत्रुविनाशनाय स्वाहा। अक्षिशूल-कुक्षिशूल-कर्णशूल-घ्राणशूलोदरशूल-गलशूल-गण्डशूल-दन्तशूल-पादार्धशूल-विनाशनाय स्वाहा। सर्व-व्याधिविनाशनाय स्वाहा। सर्वशत्रुविनाश नाय स्वाहा। ॐ सर्वस्फोटक-सर्वक्लेशविनाशनाय स्वाहा। ॐ आत्मरक्षा परमात्मरक्षा मित्ररक्षा अग्निरक्षा प्रत्यग्निरक्षा परगतिवातोरक्षा तेषां सकलबन्धाय स्वाहा। ॐ हरदेहिनी स्वाहा। ॐ इन्द्रदे

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

हिनी स्वाहा। ॐ स्वस्य ब्रह्मदण्डं विश्रामय। ॐ विश्रामय विष्णुदण्डम्। ॐ विश्रामय ज्वरज्वरेश्व रकुमारदण्डम्। ॐ हिलि मिलि मायादण्डम्।ॐ नित्यं नित्यं विश्रामय विश्रामय वारुणीशूलिनी गारुडीरक्षा स्वाहा।। गंगादिपुलिने जाता पर्वते च वनान्तरे। रुद्रस्य हृदये जाता विद्याऽहं काम रूपि णी।। ज्वल ज्वल देहस्य देहेन सकललोहपिंगिलि कटि-मपुरी किलि किलि किलि महादण्ड कुमार दण्ड नृत्य नृत्य विष्णुवन्दित-हंसिनी शंखिनी चक्रिणी गदिनी शूलिनी रक्ष रक्ष स्वाहा।

अथ बीज मन्त्रा: - ॐ ह्रां स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रां स्वाहा। ॐ ह्रीं स्वाहा। ॐ ह्रीं ह्रीं स्वाहा। ॐ ह्रूं स्वाहा। ॐ ह्रूं ह्रूं स्वाहा। ॐ ह्रें स्वाहा। ॐ ह्रें ह्रें स्वाहा। ॐ ह्रैं स्वाहा। ॐ ह्रैं ह्रैं स्वाहा। ॐ ह्रों स्वाहा। ॐ ह्रों ह्रों स्वाहा। ॐ ह्रौं स्वाहा। ॐ ह्रौं ह्रौं स्वाहा। ॐ ह्रं स्वाहा। ॐ ह्रं ह्रं स्वाहा। ॐ ह्रः स्वाहा। ॐ ह्रः ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां स्वाहा। ॐ क्रां क्रां स्वाहा। ॐ क्रीं स्वाहा। ॐ क्रीं क्रीं स्वाहा। ॐ क्रूं स्वाहा। ॐ क्रूं क्रूं स्वाहा। ॐ क्रें स्वाहा। ॐ क्रें क्रें स्वाहा। ॐ क्रैं स्वाहा। ॐ क्रैं क्रैं स्वाहा। ॐ क्रों स्वाहा। ॐ क्रों क्रों स्वाहा। ॐ क्रौं स्वाहा। ॐ क्रौं क्रौं स्वाहा। ॐ क्रं स्वाहा। ॐ क्रं क्रं स्वाहा। ॐ क्रः स्वाहा। ॐ क्रः क्रः स्वाहा। ॐ कँ स्वाहा। ॐ कँ कँ स्वाहा। ॐ खँ स्वाहा। ॐ खँ खँ स्वाहा। ॐ गँ स्वाहा। ॐ गँ गँ स्वाहा। ॐ घँ स्वाहा। ॐ घँ घँ स्वाहा। ॐ ङँ स्वाहा। ॐ ङँ ङँ स्वाहा। ॐ चँ स्वाहा। ॐ चँ चँ स्वाहा। ॐ छँ स्वाहा। ॐ छँ छँ स्वाहा। ॐ जँ स्वाहा। ॐ जँ जँ स्वाहा। ॐ झँ स्वाहा। ॐ झँ झँ स्वाहा। ॐ ञँ स्वाहा। ॐ ञँ ञँ स्वाहा। ॐ टँ स्वाहा। ॐ टँ टँ स्वाहा। ॐ ठँ स्वाहा। ॐ ठँ ठँ स्वाहा। ॐ डँ स्वाहा। ॐ डँ डँ स्वाहा। ॐ ढँ स्वाहा। ॐ ढँ ढँ स्वाहा। ॐ णँ स्वाहा। ॐ णँ णँ स्वाहा। ॐ तँ स्वाहा। ॐ तँ तँ स्वाहा। ॐ थँ स्वाहा। ॐ थँ थँ स्वाहा। ॐ दँ स्वाहा। ॐ दँ दँ स्वाहा। ॐ धँ स्वाहा। ॐ धँ धँ स्वाहा। ॐ नँ स्वाहा। ॐ नँ नँ स्वाहा। ॐ पँ स्वाहा। ॐ पँ पँ स्वाहा। ॐ फँ स्वाहा। ॐ फँ फँ स्वाहा। ॐ बँ स्वाहा। ॐ बँ बँ स्वाहा। ॐ भँ स्वाहा। ॐ भँ भँ स्वाहा। ॐ मँ स्वाहा। ॐ मँ मँ स्वाहा। ॐ यँ स्वाहा। ॐ यँ यँ स्वाहा। ॐ रँ स्वाहा। ॐ रँ रँ स्वाहा। ॐ लँ स्वाहा। ॐ लँ लँ स्वाहा। ॐ वँ स्वाहा। ॐ वँ वँ स्वाहा। ॐ शँ स्वाहा। ॐ शँ शँ स्वाहा। ॐ षँ स्वाहा। ॐ षँ षँ स्वाहा। ॐ सँ स्वाहा। ॐ सँ सँ स्वाहा। ॐ हँ स्वाहा। ॐ हँ हँ स्वाहा। ॐ क्षँ स्वाहा। ॐ क्षँ क्षँ स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ लेषाय स्वाहा। ॐ गणेश्वराय स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशक्तिक भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-सर्ववेताल-वृश्चिकभय विनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा। ॐ शिं शिवाय स्वाहा। ॐ सूं सूर्याय स्वाहा। ॐ सों सोमाय स्वाहा। ॐ मं मंगलाय स्वाहा। ॐ बुं बुधाय स्वाहा। ॐ बृं बृहस्पतये स्वाहा। ॐ शुं शुक्राय स्वाहा। ॐ शं शनैश्चराय स्वाहा। ॐ रां राहवे स्वाहा। ॐ कें केतवे स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशक्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-सर्ववेताल-वृश्चिकभय विनाशनाय स्वाहा। ॐ सिंह शार्दूल गजेन्द्र ग्राह व्याघ्रादि मृगाान् बध्नामि स्वाहा। ॐ शस्त्रं बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्रं बध्नामि स्वाहा। ॐ वायुं बध्नामि स्वाहा। ॐ गतिं बध्नामि स्वाहा। ॐ आशां बध्नामि स्वाहा। ॐ सर्वं बध्नामि स्वाहा। ॐ सर्व जन्तुं बध्नामि स्वाहा। ॐ बन्ध बन्ध, मोचनं कुरु कुरु स्वाहा।

अथ दिग्बन्धनम् -

ॐ माहेन्द्रदिशायामैरावतारूढं वज्रहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिमैन्द्रमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ ऐन्द्रमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।1।।

ॐ अग्निदिशायां मृगारूढं शक्तिहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिमग्निमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ अग्निमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।2।।

ॐ दक्षिणदिशायां महिषारूढं कृष्णवर्णं दण्डहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं यममण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ यममण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।3।।

ॐ नैर्ऋत्यदिशायां प्रेतारूढं खड्गहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं नैर्ऋत्यमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ नैर्ऋत्यमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।4।।

ॐ पश्चिमदिशायां मकरारूढं पाशहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं वरुणमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ वरुणमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।5।।

ॐ वायव्यदिशायां मृगारूढं धनुर्हस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं वायव्यमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ वायव्यमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।6।।

ॐ उत्तरदिशायां नरारूढं गदाहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं कुबेरमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ कुबेरमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।7।।

ॐ ईशानदिशायां वृषभारूढं शूलहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिमीशानमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ ईशानमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।8।।

ॐ अन्तरदिशायां लोष्टनागारूढं चक्रहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं कालाग्निमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ कालाग्निमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।9।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

ॐ ब्रह्मदिशायां हंसारूढं ब्रह्मास्त्रहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं ब्रह्माण्डमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ ब्रह्माण्डमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।10।।

ॐ विष्णुदिशायां गरुडारूढं गदाहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं विष्णुमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ विष्णुमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा।।।11।।

ॐ अग्निदिशायां कूर्मारूढं लोष्ठभागं कुपरिघहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं पाताल-मण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ पातालमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा । ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशक्तिक -भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-सर्ववेताल-वृश्चिकभय विनाशनाय स्वाहा।।12।।

ॐ पूर्वदिशायां व्रजको नाम राक्षसस्तस्य व्रजकस्याष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।।1।।

ॐ अग्निदिशायामग्निज्वालो नाम राक्षसस्तस्याग्निज्वालस्याष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाच-स्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।।2।।

ॐ दक्षिणदिशायामेकपिंगलिको नाम राक्षसस्तस्यैकपिंगलिकस्याष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाच स्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।।3।।

ॐ नैर्ऋत्यदिशायां मरीचको नाम राक्षसस्तस्य मरीचकस्याष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।।4।।

ॐ पश्चिमदिशायां मकरो नाम राक्षसस्तस्य मकरस्याष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।।5।।

ॐ वायव्यदिशायां तक्षको नाम राक्षसस्तस्य तक्षकस्याष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।।6।।

ॐ उत्तरदिशायां महाभीमो नाम राक्षसस्तस्य महाभीमस्याष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।।7।।

ॐ ईशानदिशायां भैरवो नाम राक्षसस्तस्य भैरवस्याष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।।8।।

ॐ ब्रह्मदिशायां ब्रह्मरूपो नाम राक्षसस्तस्य ब्रह्मरूपस्याष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशक्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच राक्षस-ब्रह्मराक्षस-सर्ववेताल-वृश्चिकभय विनाशनाय स्वाहा।।9।।

(इसके अनन्तर कवच पढ़ें।)

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

अथ कवचं –

ॐ शिखां मे क्लीं ब्रह्माणी रक्षतु। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा।।1।।
ॐ शिरो मे रक्षतु माहेश्वरी। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा।।2।।
ॐ भुजौ मे सौः रक्षतु शर्वाणी। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा।।3।।
ॐ उदरो मे रक्षतु रुद्राणी। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा।।4।।
ॐ जंघे मे रक्षतु नारसिंही। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा।।5।।
ॐ सर्वांगे मे रक्षतु सुन्दरी। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा।।6।।

परिणामे महाविद्या महादेवस्य सन्निधौ। एकविंशतिवारेण पठित्वा सिद्धिमाप्नुयात्।।
स्त्रियो वा पुरुषो वाऽपि पापं भस्म समाचरेत्। दुष्टानां मारणं चैव सर्वग्रहनिवारणम्।।
सर्वकार्येषु सिद्धिः स्यात्प्रेतशान्तिर्विशेषतः। अष्टोत्तरशतेनाभिमन्त्र्य च जलं पाययेत्।।

सर्वमन्त्रकीलनस्तोत्रमन्त्रः

ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम्।।

अथ महाविद्यास्तोत्रम्

ॐ हुं श्रीं ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा ऐं।।

महाविद्याध्यानम् –

चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम्। महाभीमां करालास्यां सिद्धिविद्याधरैर्युताम्।।
मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम्। एवं ध्यायेन्महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये।।

शिव उवाच –

दुर्लभं तारिणीमार्गं दुर्लभं तारिणीपदम्। मन्त्रार्थं मन्त्रचैतन्यम् दुर्लभं शवसाधनम्।।1।।
श्मशानसाधनं योनिसाधनं ब्रह्मसाधनम्। क्रियासाधनकं भक्तिसाधनं मुक्तिसाधनम्।।2।।
तव प्रसादादेवेशि सर्वाः सिद्ध्यन्ति सिद्धयः। नमस्ते चण्डिके चण्डि चण्डमुण्डविनाशिनी।।3।।
नमस्ते कालिके कालि महाभयविनाशिनी। शिवे रक्ष जगद्धात्रि प्रसीद हरवल्लभे।।4।।
प्रणमामि जगद्धात्रीं जगत्पालनकारिणीम्। जगत्क्षोभकरीं विद्यां जगत्सृष्टिविधायिनीम्।।5।।
करालां विकटां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम्। हरार्चितां हराराध्यां नमामि हरवल्लभाम्।।6।।
गौरीं गुरुप्रियां गौरवर्णालंकारभूषिताम्। हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम्।।7।।
सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्धविद्याधरगणैर्युताम्। मंत्रसिद्धिप्रदां योनिसिद्धिदां लिंगशोभिताम्।।8।।
प्रणमामि महामायां दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम्। उग्रामुग्रमयीमुग्रतारामुग्रगणैर्युताम्।।9।।
नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम्। श्यामांगीं श्यामघटितां श्यामवर्णविभूषिताम्।।10।।
प्रणमामि जगद्धात्रीं गौरीं सर्वार्थसाधिनीम्। विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम्।।11।।
विद्यामाद्यां गुरोराद्यामाद्यनाथप्रपूजिताम्। श्रीदुर्गां धनदामन्नपूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम्।।12।।
प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखरवल्लभाम्। त्रिपुरासुन्दरीं बालामबलागणभूषिताम्।।13।।
शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम्। सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागणविभूषिताम्।।14।।
नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्मविष्णुहरप्रियाम्। सर्वसिद्धिप्रदां नित्यामनित्यगुणवर्जिताम्।।15।।
सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्चितां सर्वसिद्धिदाम्। दिव्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम्।16।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

महेशभक्तां माहेशीं महाकालप्रपूजिताम्। प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुरविमर्दिनीम्।।17।।
रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीजविमर्दिनीम्। भैरवीं भुवनां देवीं लोलजिह्वां सुरेश्वरीम्।।18।।
चतुर्भुजां दशभुजामष्टादशभुजां शुभाम्। त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम्।।19।।
अट्टहासामट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम्। कमलां छिन्नभालां च मातंगीं सुरसुन्दरीम्।।20।।
षोडशीं विजयां भीमां धूम्रां च बगलामुखीम्। सर्वसिद्धिप्रदां सर्वविद्यामंत्रविशोधिनीम्।।21।।
प्रणमामि जगत्तारां सारां च मन्त्रसिद्धये। इत्येवं च वरारोहां स्तोत्रं सिद्धिकरं परम्।।22।।
पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनि। कुजवारे चतुर्दश्याममायां जीववासरे।।23।।
शुक्रे निशिगते स्तोत्रं पठित्वा मोक्षमाप्नुयात्। त्रिपक्षे मंत्रसिद्धिः स्यात्स्तोत्रपाठाद्धि शंकरि।24।।
चतुर्दश्यां निशाभागे शनिभौमदिने तथा। निशामुखे पठेत्स्तोत्रं मंत्रसिद्धिमवाप्नुयात्।।25।।
केवलं स्तोत्रपाठाद्धि मंत्रसिद्धिरनुत्तमा। जागर्ति सततं चण्डी स्तोत्रपाठाद्धुजंगिनी।।26।।

।। इति श्रीमुण्डमालातन्त्रान्तर्गतमहाविद्यास्तोत्रं संपूर्णम्।।

अथ महाविद्याकवचम्

विनियोगः – ॐ अस्य श्रीमहाविद्याकवचमहामन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, महाविद्या देवता, हुँ श्रीं ह्रीं बीजं, वज्रवैरोचनीये शक्तिः, हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं कीलकम्, धर्मार्थकाममोक्ष–सिद्ध्यर्थे मनोवांछितफलसिद्ध्यर्थे च जपे विनियोगः।

ऋष्यदिन्यासः – ॐ अस्य श्रीमहाविद्याकवचमहामन्त्रस्य सदाशिव ऋषये नमः – शिरसि, ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः –मुखे, ॐ महाविद्या देवतायै नमः –हृदये, ॐ हुँ श्रीं ह्रीं बीजाय नमः –गुह्ये, ॐ वज्रवैरोचनीये शक्तये नमः – पादयोः, ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं कीलकाय नमः – नाभौ, ॐ श्री धर्मार्थकाममोक्षसिद्ध्यर्थे मनोवांछितफलसिद्ध्यर्थे च जपे विनियोगाय नमः – सर्वांगे।

भैरव उवाच –

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम्। आद्याया महाविद्यायाः सर्वाभीष्टफलप्रदम्।।1।।
कवचस्य ऋषिर्देवि सदाशिव इतीरितः। छन्दोऽनुष्टुब् देवता च महाविद्या प्रकीर्तिता।।
धर्मार्थकाममोक्षाणां विनियोगश्च साधने।।2।।
ऐंकारः पातु शीर्षे मां कामबीजं तथा हृदि। रमाबीजं सदा पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः।।3।।
ललाटे सुन्दरी पातु उग्रा मां कण्ठदेशतः। भगमाला सर्वगात्रे लिंगे चैतन्यरूपिणी।।4।।
पूर्वे मां पातु वाराही ब्रह्माणी दक्षिणे तथा। उत्तरे वैष्णवी पातु चेन्द्राणी पश्चिमेऽवतु।।5।।
माहेश्वरी चाग्नेय्यां नैर्ऋते कमला तथा। वायव्यां पातु कौमारी चामुण्डा हीशकेऽवतु।।6।।
इदं कवचमज्ञात्वा महाविद्यां च यो जपेत्। न फलं जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि।।7।।

।। इति रुद्रयामलान्तर्गतमहाविद्याकवचं संपूर्णम्।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM